

॥ श्री योगेश्वर एव संपूर्ण जुल ॥

आशा सन्काधि

2590

ASHA ARCHIVES

ॐ नमो श्रीमहायागस्वराय ॥
यत्कुरुतीदद्याय ॥ ॥ श्रीमद
कालत्रयनीलकान्तिगावकु
कुर्येकत्रयस्मन्मन्त्रमाभि
हूकालत्रयस्मिन्नायमोविद्वक्

ॐ नमो श्रीकालाग्ध्यवा ॐ नमो श्री
मद्विषमसद्युधपसूतिसन्व
यान्कालिगरवज्रध्वनंमकर्हिचक्र १
वान्वंसयाद्यादिगकनस्थहृदयस्थ
माह्व्यमूर्वनयवज्यवागमनवा

॥ गद्यद्वीकृष्यवज्रमार्गद्वीकमलमसूर्यकदाधिविकनिष्यंतगमाधुलयवीजाक
वाधियथास्थाययद् ॥ ॥ ॐ नमो श्रीकृष्णायमाविककुमधुलत्रयविधि ॥ कृष्णं कथयत् पूर्व
चक्षुमधुलकंकावं ॥ सीत ॥ ॥ दक्षिणमूलस्थमकावपीकं ॥ पश्चिममूलस्थकावत्रलं
॥ उद्वहविकदकावंमूलस्थ ॥ अग्नयादिवदुर्ध्वकावचक्षुमधुलहं ॥ यथाक्रमंजामदो
वृद्धं प्रकृववदुष्टय ॥ ॥ सीतकृष्णवक्रहविकवर्ध ॥ वाक्कयत् पूर्वदक्षिणादिवाच

प्रयत्ननिवाळूनि ॥ ॐ श्रुत ॥ वावडुस्यसंस्त्यरुद्रस्यसीकवल्कहविगवर्धनकाहावडु
 स्यसंसीकवर्धवधुमधुलस्थधयागित ॥ ॥ ॐ श्रुतवचडुस्यसंस्त्यरुद्र ॥ वाकतावासा
 नूरासाधस्वविशयासहविलीयकुडवयंवडुसंस्त्यरुद्र ॥ वाकतठयवधुविधानाव २
 दगात्मकीकवूष्मासदितायकाचर्विकादियागिनीवडुस्यसंस्त्यरुद्र ॥ अस्यांतवपटकाहावधुप
 नू ॥ वाकतवडुवचर्विकावसंस्त्यवाद्ययकि ॥ ३ ० हराजकवूष्माकाह ॥ वाकिह्रमधसंस्त्य

लज्जहहिमाह ॥ वाकथावडुवावाहिनचउमात्रयवाजिअराडव ॥ ३ ० हराजविहंआ
 उल ॥ वाकथावडुसंस्त्यरुद्रमिनाअनिमंदिअरुद्रमिथुना ॥ ३ ० हराजलाअरुद्रमिथुना ॥
 कथावडुसंस्त्यरुद्रमीकांनूडुआरुद्रमिथुनाहाविडिवावाहिमहावराअनिमकि ॥ ॥ ॐ निडिअरुद्र
 हयमात्रिकरुद्रमिगीमीसमनंरुद्रमवडुसंस्त्यरुद्रमिथुना ॥ ॥ ॐ आरुद्रमिथुना ॥
 कवर्धवल्कहाकाकावडुयंविदवर्हिं ॥ ॥ ३ ० हराजकवूष्माकाह ॥ वाकिह्रमधसंस्त्य

ल्यस्य कृष्णयंका वक्तव्यं वक्तुं कवकं न गच्छेत् ॥ वक्तुं मूलस्थ कृष्णयंका वक्तुं ॥ नमः ॥
 वीजं वक्तुं पवित्रं नमो नमः ॥ ॥ वक्तुं यमो विंशतिं कृष्णं कथं वीजं लवमांता मूधुमालाधनं ॥
 वाक्यं लालं कृष्णं कथं कथं वक्तुं ॥ वक्तुं दृष्ट्वा कथं लालं मूधुमालाधनं ॥ यत्नं यत्नं वक्तुं नमः ॥ ३
 वृत्तां नमः वक्तुं वक्तुं वक्तुं वक्तुं ॥ ॥ मूलं कृष्णं दक्षिणं सीतं मूधुमालाधनं ॥ मूलं कृष्णं दक्षिणं सीतं मूधुमालाधनं ॥
 वक्तुं ॥ दक्षिणं वक्तुं वक्तुं वक्तुं वक्तुं ॥ ॥ वक्तुं वक्तुं वक्तुं वक्तुं ॥

वक्तुं वक्तुं ॥ ॥ नमः नमः नमः नमः ॥ वक्तुं वक्तुं वक्तुं वक्तुं ॥ वक्तुं वक्तुं वक्तुं वक्तुं ॥
 वक्तुं वक्तुं वक्तुं वक्तुं ॥ वक्तुं वक्तुं वक्तुं वक्तुं ॥ वक्तुं वक्तुं वक्तुं वक्तुं ॥
 वक्तुं वक्तुं वक्तुं वक्तुं ॥ वक्तुं वक्तुं वक्तुं वक्तुं ॥ वक्तुं वक्तुं वक्तुं वक्तुं ॥
 वक्तुं वक्तुं वक्तुं वक्तुं ॥ वक्तुं वक्तुं वक्तुं वक्तुं ॥ वक्तुं वक्तुं वक्तुं वक्तुं ॥
 वक्तुं वक्तुं वक्तुं वक्तुं ॥ वक्तुं वक्तुं वक्तुं वक्तुं ॥ वक्तुं वक्तुं वक्तुं वक्तुं ॥

मरुत्सुंयामयत्नं वदनं॥ ॥ दक्षिणपार्श्वे चक्रवर्त्तकहिंसाविधौ॥ ॥ वामरुजं च त्रयम्
 कपालध्वनिनै॥ ॥ ओं दिनडिगिति मनु मूत्रं वं॥ ॥ कलादक्षिणमकारपविनतं॥
 पिबुनयेमात्रिपीकवर्ध॥ मूलपीकंदक्षिणमिहं वामरुत्सुं वदनं॥ ॥ दक्षिणरुजं च त्रयं ४
 अकारहिंसाविधौ॥ ॥ वामरुजं च कपयन्नकपालध्वनिनै॥ ॥ उं च त्रयं मिमिमनु मूत्रं वं॥
 ॥ कुरु यश्चिममकारेन वा गयमात्रि॥ ॥ वाहिमवर्ध॥ ॥ मूलवत्कंदक्षिणरुत्सुं वदनं॥

मरुत्सुं वदनं॥ दक्षिणकवचत्रयपन्नरवअकारहिंसाविनं॥ वामपार्श्वे चक्रवर्त्तकपालध्व
 निनं॥ ॥ ओं आगालिमिमिमनु मूत्रं वं॥ ॥ कुरु उं च त्रयं वंकारपविनतं मीष्य
 यमात्रि॥ मनु॥ वत्कवर्ध॥ ॥ मूलहविमदक्षिणरुत्सुं वामपीकवर्ध॥ दक्षिणरुजं
 च त्रयं अकारहिंसाविनं॥ ॥ वामरुजं च कपयन्नकपालीनं॥ ॥ ओं यहाधमिमि॥ ॥
 मनु मूत्रं वं॥ चत्वालाप्यरूपशालिदयदागपिजलाहकलक्तुधा॥ ॥ वत्कवत्तुवर्ध

तशाः। यत्नान्तरसहा॥ वातनास्यं न वयं यत्नान्तरसहा॥ वातनास्यं न वयं यत्नान्तरसहा॥
 यमालिप्तदृशी॥ ॥००॥ किञ्चिद्गुणयमाविम्वञ्जयदलविधिः॥ ॥ मेषीखकावां
 वा० माहवकिमिमुमुञ्चवन्तिपश्यन्॥ ॥ कनानेसम्यासकावधवञ्जयवाहि॥ ॥ ॥
 वयमाविम्वञ्जितं मूलघानवदनाकन्यशास्मिकांशववकिमिमुमुञ्चवन्तिपश्यन्॥ ॥
 कनवायुव्यदाकादधवञ्जसर्ववकीवन्तिवर्धे॥ ॥ रागायमाविम्वञ्जितमूदितास्मिकां॥

वा० माहवकिमिमुमुञ्चवन्तिपश्यन्॥ ॥ कनानेसम्यासकावधवञ्जयवाहि॥ ॥ ॥
 माविम्वञ्जितं मूलघानवदनाकन्यशास्मिकांशववकिमिमुमुञ्चवन्तिपश्यन्॥ ॥
 वन्तिपश्यन्॥ ॥ कनानेसम्यासकावधवञ्जयवाहि॥ ॥ ॥
 वन्तिपश्यन्॥ ॥ कनानेसम्यासकावधवञ्जयवाहि॥ ॥ ॥
 वन्तिपश्यन्॥ ॥ कनानेसम्यासकावधवञ्जयवाहि॥ ॥ ॥
 वन्तिपश्यन्॥ ॥ कनानेसम्यासकावधवञ्जयवाहि॥ ॥ ॥

माविग वायवचकुसुमनयूजिष्कवकांकिनंदधु॥ वाँदधुधुगिगिमकुमव्वं
 कविग वाँययधुगिगिमकु॥ मूचवमं॥ कताउरुववाप्रवाकावपविनमंरवअयमाविन्
 व्यायमाविमदसिष्वायाग॥ ॥ सकलमाधुल्यदवगा॥ ॥ ॐ निश्रीकृष्णयमावि ३
 संकुमधुलस्त्रयवसहृर्गविधि॥ ॥ कतावाअपूरकाशचडुय॥ ॥ पस्थितन
 यानिर्वविधेदलकमलस्थम्वास्तनस्थानि॥ ॥ चत्वारिकयातानियंचासुहृपविपू

धुनिष्वायाग॥ ॐ निस्वचकुसुमिष्वाकिन्वित्त्यागविहविह॥ वाँविघ्नान्कि
 ऊँ॥ वाँआ॥ ॐ॥ ॥ ॐ निश्रीकृष्णयमाविमकुवाअचकुविधि॥ ॥ कदम
 धुल॥ सावमधुलयातांवकुवादि॥ ॥ ॥ वाँवकुवकु॥ वाँवकुआग॥ वाँवकु
 घाघा॥ वाँवकुजिह्वा॥ वाँवकुकायः॥ ॐ निमकुधाधिष्टिनिष्ठुग॥ कथागिलसिच
 लुस्थकुमाकावकं॥ ॐ वक्तृपमस्थआ॥ काववक्तृ॥ ॥ कदिवक्तृमन्यस्थक

॥ ह्रूं का चं का य वा कु चि ह्रा त्म कं य ध्य क् ॥ ॥ गुरु हस्त हृ दी ऊ व र्भी ना ण का द न स्थि ता
 न्म स व संच द्वां त्मं पृ ष्ठ त्म रि षी च रु मां स र्व त्म ग ता ष्ठ ति या र्थ य क् ॥ ॥ गुरु हस्त य मा
 रि नू पा य न्न य च क्ष म्म रु क् के ल लो व हि वि च्च र्त्त ॥ गुरु हस्त क ल वा ष्ठ र्त्त व म लो ष ग ॥ ॥
 मा न्द दी ष्म मा नं ॥ वा ष्ठ र्त्त व मां त्मा नं इ ष्ठ मा ष्ठ य नां सि ल सि च्च क ल सं म्म ॥
 क् ॥ ॥ गुरु य था ॥ म ष्ठ ले ष्ठ व स्य अ ष्ठ र्त्त ॥ ॥ मा ह य मा वि वे र्त्त ॥ ॥ यि शु न

ऊ मा र्त्त व संच द्वां त्मं पृ ष्ठ त्म रि षी च रु मां स र्व त्म ग ता ष्ठ ति या र्थ य क् ॥ ॥ गुरु हस्त हृ दी ऊ व र्भी ना ण का द न स्थि ता
 ॥ ॥ वि ष्ठ र्त्त व संच द्वां त्मं पृ ष्ठ त्म रि षी च रु मां स र्व त्म ग ता ष्ठ ति या र्थ य क् ॥ ॥ गुरु हस्त य मा
 अ मि ता र्त्त ॥ ॥ वि ष्ठ र्त्त व संच द्वां त्मं पृ ष्ठ त्म रि षी च रु मां स र्व त्म ग ता ष्ठ ति या र्थ य क् ॥ ॥ गुरु हस्त य मा
 ॥ ॥ वि ष्ठ र्त्त व संच द्वां त्मं पृ ष्ठ त्म रि षी च रु मां स र्व त्म ग ता ष्ठ ति या र्थ य क् ॥ ॥ गुरु हस्त य मा
 ॥ ॥ वि ष्ठ र्त्त व संच द्वां त्मं पृ ष्ठ त्म रि षी च रु मां स र्व त्म ग ता ष्ठ ति या र्थ य क् ॥ ॥ गुरु हस्त य मा
 ॥ ॥ वि ष्ठ र्त्त व संच द्वां त्मं पृ ष्ठ त्म रि षी च रु मां स र्व त्म ग ता ष्ठ ति या र्थ य क् ॥ ॥ गुरु हस्त य मा
 ॥ ॥ वि ष्ठ र्त्त व संच द्वां त्मं पृ ष्ठ त्म रि षी च रु मां स र्व त्म ग ता ष्ठ ति या र्थ य क् ॥ ॥ गुरु हस्त य मा

नमो नमो भुलमानियसंयुक्त ॥ ॐ मुं डल ॥ ॐ दं सुं डं ॥ ॐ ययं ॥ ॥
 ॐ किमनुवदु सुयन आकृष्य वस्थव वावगीकृत्य ॥ समयमधुलयालकलीलिखं
 विविक्तयत् ॥ ॥ नकायं कावयविनरय ॥ ॥ कवायूमधुलाहियि ॥ ॥ वं कावय ॥
 विनगाग्निमेधुलमापिकसिक्त ॥ कावयविनरय कपालविनरय ॥ ॥ गदहनं ॥ ॥
 ॐ कावाधिष्ठिं डविहं य ॥ ॥ ॐ कावाविनरविनिर्मनय ॥ ॥ नानां सर्वदधानां

हृदयामरुमा नीयकृष्यवस्थ ॥ ॐ कि कृ ॥ ॥ यंचामरु ॐ आहं ॐ कि अकृष्य
 याधिष्ठिं ॥ सर्वदधानां हं कावयनियत्रवत् ॥ कववकृष्यविनरय ॥ ॥ कवायूमधुलाहियि ॥ ॥
 ॐ ॐ कि दयमा विगुम्भमहाव ॥ ॥ हउदुहयकृ विहामिगुम्भ ॥ ॥ हिकोहमहाव ॥
 ॥ कवावकृवाहिमरुव ॥ ॥ य ॐ नचनकयि ॥ ॥ सग्नमत्रया ॥ ॥ कि

हिर्हृजधकाहमधश्च हउ हूँ वज्रं ल॥ ॥ कलावजसवस्वकिमूरवन॥ ॥ काला
 खर्वयवानजवहृविहमिमसिक्क॥ ॥ वज्रसवमव्विहमसिधश्चहिउह॥ ॥
 महमह॥ ॥ कलागोत्रीमूरवन॥ ॥ ॐ ह्रीं सैं कुं ह्रीं उहिकिहृमूहाकंति
 ॥ ॥ कलूकाहृशउहृऊगपऊउचन॥ ॥ ॐ मिथी हृहृयमाविर्मऊगुक्कव
 कविधि॥ ॥ ॐ नगीतिकयामलसंयूयमुनि॥ ॥ नडकारय॥ ॥ नमाहव

जस्वरावसुत्वयमाविशकिहिघन॥ सर्ववज्रसयसास्तकायवज्रनमास्तु॥
 पिबुवजस्वरावसुत्वयमाविशकिहिघन॥ विह्वज्रपतिकासवत्ववजनमास्तु॥
 ॥ वागावजसरावसुत्वयागधमाकवपर॥ सर्वघायवागवावजनमास्तु॥
 ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं वावजस्वरावसुत्वयमाविसर्वकर्मिककायवजपतिकाशरवजया
 तिनमास्तु॥ ४ ॥ सर्ववजस्वरावसुत्वसर्ववज्रकसंगरु॥ सर्ववज्रववागय

माधुलनमाम्बुनं ५ ॥ ०० निमहायोग ॥ ॥ ०० निधीकृष्टयमानिकृष्ट
महायोगसंगपटलसमाय ४ ॥ ॥ ०० निधीकृष्टयमानिकृष्ट
२२ टिमिषायकृष्टयमानिकृष्ट ४ ॥ ॥ ०० निधीकृष्टयमानिकृष्ट

2590